राजस्थान GK

गुर्जर प्रतिहार वंश

PDF By- Aadarsh Kumawat (www.Rajasthanclasses.in)

Free Download PDF

अपने मत्रों के साथ शेयर जरुर करें |

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites

राजस्थान क्लासेज

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

गुर्जर प्रतिहार वंश

प्रतिहार शब्द का अर्थ '**द्वारपाल**' है, क्योंकि प्रतिहारों ने अरब आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा की । अतः इनकी तुलना मौर्य व गुप्त राजाओं से की जा सकती है प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण के वंशज **सूर्यवंशी/रघुवंशी** मानते है ।
गुर्जर-प्रतिहारों का शासन छठी से दसवीं शताब्दी तक रहा, जो जोधपुर में मण्डोर व जालौर का भीनमाल क्षेत्र था, इन्होंने बाद में उज्जैन व कन्नौज को अपनी शक्ति का केन्द्र बनाया 8वीं-10वीं शताब्दी मे उत्तर भारत मे गुर्जर प्रतिहारवंश प्रभावशाली था ।

Gurjar Pratihar Vansh

गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया (वनरक्षक-2013)
डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।

- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली/गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहारवंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था ।
- गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए। गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **भीनमाल (जालौर)** थी ।
- बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' **हर्षचरित** ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites

इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश **पुल्केशिन द्वितीय** के ऐहोल अभिलेख में '**गुर्जर जाति**' का सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।

डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।

- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत **सी-यू-की** में **कु-चे-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है । जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी ।
- अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को '**जुर्ज**' भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को **अल गुर्जर** तथा प्रतिहार राजा को '**बोरा**' कहकर पुकारता है ।
- भगवान लाल इन्दजी ने गुर्जरों को '**गुजर**' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुजर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है ।
- **डॉ. गौरीशंकर ओझा** प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते है ।
- **जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल** के बताते है ।
- **मिस्टर जैक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । (कॉलेज व्याख्यता इतिहास-2016)
- **कनिघंम** ने गुर्जर प्रतिहारों को **कुषाणवंशी** कहा है ।
- **डॉ. भंडारकर** ने गुर्जर प्रतिहारों को **खिज्रों की संतान** बताकर विदेशी साबित किया है ।
- **स्मिथ स्टेनफोनो** ने गुर्जर प्रतिहारों को **हूणवंशी** कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था । (सीटीआई-2012)
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई । (ग्रेड द्वितीय-हिंदी-201०)

मुहणौत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमे से दो प्रमुख थी-**मण्डोर व भीनमाल** ।

- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

राजस्थान क्लासेज

- संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

अवन्ति/उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- **कवि वृष** की उपाधि **मुंज राजा** को दी गई थी ।

आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।
गुर्जरों तथा अन्य पिछड़ी जातियों (एस बी सी) के लिए राजस्थान सरकार ने 2015 मे 5 प्रतिशत कोटे की व्यवस्था की ।

मण्डोर शाखा (जोधपुर)

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- राजस्थान के प्रमुख नृत्य [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख बांध [नोट्स]
- राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख दुर्ग [नोट्स]
- राजस्थान की प्रमुख झीलें [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य
- राजस्थान के प्रमुख इतिहासकार [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख मेलें [नोट्स]

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites
PDF BY- AADARSH KUMAWAT

- संस्थापक - रज्जिल
- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी **मण्डोर** थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डोर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुरू/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरूष/ गुर्जर प्रतिहारों का **मूल पुरूष** कहते है ।
- हरिश्चंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम **भद्रा** था ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम **भोगभट्ट, कध्दक, रज्जिल और दह** थे ।

रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरूष हरिशचंद्र थे, तो मण्डोर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे ।
- रज्जिल ने मण्डोर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया

नरभट्ट

- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने नरभट्ट का उल्लेख '**पेल्लोपेल्ली**' नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ **साहसिक कार्य करने वाला** होता है ।

भीनमाल (जालौर) शाखा

- रघुवंशी प्रतिहारों ने **चावडों** से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों के उत्पति के विषय में जानकारी **ग्वालियर प्रशस्ति** से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

नागभट्ट प्रथम (780-75०ई)

- **Nagabhata प्रथम** को '**नागवलोक**' तथा इसके दरबार को **नागवलोक** दरबार कहा जाता था ।
- नागभट्ट प्रथम को **प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक** कहा जाता है ।
- इसकी जानकारी हमें पुलिकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है ।
- नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को **चांवडों** से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल की राजधानी बनाया । (पीटीआई -201 5)
- इसने भीनमाल में प्रतिहारवंश की स्थापना की । नागभट्ट प्रथम ने आबू, जालौर आदि को जीतकर **उज्जैन (अवन्तिका)** को अपनी दूसरी राजधानी बनाया ।
- नागभट्ट प्रथम के समय सभी राजपूतवंश गुहिल , चौहान, परमार, राठोड़, चंदेल , चालुक्य इसके सामंत के रूप में कार्य करते थे ।
- **ग्वालियर अभिलेख** के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने **म्लेच्छ (अरबी)** सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।
- नागभट्ट प्रथम का समकालीन अरब शासक जूनैद था । इसकी पुष्टि अल बिलादुरी के विवरण से होती है ।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites

-

हांसोट अभिलेखानुसार समकालीन अरब शासक जुनैद के नियंत्रण से भड़ोच छीन कर नागभट्ट प्रथम ने चाहमान भतृवडढ को शासक नियुक्त किया ।

वत्सराज (780 -795 ई)

राजस्थान क्लासेज

- वत्सराज देवराज व **भूयिकादेवी** का पुत्र था ।
- वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।
- Vatsaraj ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष **कन्नौज** को लेकर हुआ ।
- यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ ।
- उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए । परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट **राजा ध्रुव** से हारा था ।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत **गुर्जर-प्रतिहार** शासक वत्सराज के समय हुई ।
- सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ईं.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज पर(725 ईं.- 752 ईं.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है । ये तीन शक्तियाँ

1. उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
2. पूर्व के पाल (बंगाल के)
3. दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट

- त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई । त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहारवंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहारवंश ने ही किया ।
- **Tripartite conflict (त्रिपक्षीय संघर्ष)** का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज , बंगाल के पाल शासक **धर्मपाल** व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर शासित **इन्द्रायुध** को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युध्द में पराजित किया । किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ ।
- वत्सराज को रणहस्तिन (युद्ध का हाथी) की उपाधि प्राप्त थी । वत्सराज के समय 778 ईं. में उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलय माला ग्रंथ' की तथा जिनसेनसूरी द्वारा 781 ई. में 'हरिवंश पुराण' की रचना की गई ।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था ।
- Vatsaraj ने ओसियाँ (जोधपुर) में एक सरोवर तथा महावीर स्वामी का एक मंदिर बनवाया जो कि पश्चिम भारत का प्राचीनतम जैन मंदिर माना जाता है ।
- राजस्थान में प्रतिहारों का प्रमुख केन्द्र ओसियां (जोधपुर) था । वत्सराज के शासनकाल में वलिप्रबंध नामक काव्य ग्रंथ लिखा गया । जिसमें सती प्रथा, नियोग प्रथा एवं स्वयंवर प्रथा की जानकारी मिलती है ।

नागभट्ट द्वितीय (795-838 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय को उपलब्धियों का वर्णन ग्वालियर प्रशस्ति में मिलता है ।
- अरब आक्रमणकारियों पर पूर्णत: रोक लगाने वाला प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय था ।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- वषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- 1000 प्रश्न ई-बुक Download
- राजस्थान GK ई- बुक डाउनलोड
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites

- नागभट्ट द्वितीय की दानशीलता एवं कन्यादान करने के कारण इन्हें '**कर्ण**' की उपाधि दी गई। जिसका उल्लेख **ग्वालियर अभिलेख** में मिलता है ।
- 833 ई. में नागभट्ट द्वितीय ने गंगा में जल समाधि ली ।

मिहिरभोज (836-886 ई.)

- मिहिरभोज का शाब्दिक अर्थ '**सूर्य का प्रतीक**' है ।
- इन्होने अपने पिता राम भद्र की हत्या कर प्रतिहारों का शासक बना, इस कारण मिहिरभोज को प्रतिहारों में पितृहंता कहा जाता है । मिहिरभोज कट्टर इस्लाम विरोधी था, उसने बलपूर्वक बहुत से मुसलमानों को हिंदु बनवाया ।
- मिहिर भोज गुर्जर प्रतिहारवंश में सबसे शक्तिशाली राजा था । मिहिरभोज का काल गुर्जर प्रतिहारवंश का चरमोत्कर्ष काल था । आदि वराह की उपाधि मिहिर भोज शासक ने धारण की वदहै । (ग्रेड द्वितीय-2007)
- ग्वालियर प्रशस्ति मे मिहिर भोज के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलती है । यह प्रशस्ति भोज के काल में लिखी गई ।
- मिहिरभोज ने द्रुम नामक सिक्का भी चलाया था ।
- अरब यात्री सुलेमान व राजतरंगिनी के लेखक कल्हण ने मिहिरभोज के शासन व्यवस्था की प्रशंसा की। कश्मीरी कवि कल्हण की राजतंरगिणी से मिहिरभोज की उपलब्धियों की जानकारी प्रात होती हैं ।
- 851 ई. में अरब यात्री '**सुलेमान**' ने मिहिरभोज के समय भारत की यात्रा की, जिसका विवरण **सुलेमान** की पुस्तक **किताब-उल-सिंध-वल-हिन्द** में है ।
- गुर्जर प्रतिहारों की अश्व सेना तत्कालीन भारत में सर्वश्रेष्ठ थी । 893 ई. के एक प्रतिहार लेख से दण्डपाशिक नामक पुलिस अधिकारी का उल्लेख मिलता है ।
- मिहिरभोज वैष्णव धर्म का अनुयायी था । मिहिरभोज ने विष्णु की सगुण व निर्मुण दोनों रूपो में पूजा की तथा विष्णु को ऋषिकेश कहा
- उत्तरप्रदेश के बेग्रमा लेख में इसे 'संपूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला' बताया गया ।

महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)

- महेन्द्रपाल का गुरू व दरबारी कवि **राजशेखर** था । (कॉलेज व्याख्यता, इतिहास-2० 16)
- राजशेखर के ग्रंथों मे प्रथम शासक महेन्द्रपाल जिसे परमभट्टारक तथा महाराजाधिराज, परमेश्वर की उपाधियों से पुकारा गया । (आरटेट 2012) महेन्द्रपाल प्रथम को 'रघुकुल चूडामणी, निर्भयराज व निर्भय नरेन्द, महीशपाल तथा महेन्दायुध' आदि नामों से भी पुकारा गया ।
- राजशेखर ने **कर्पूर मंजरी, प्रबंधकोष, बाल रामायण, बाल भारत (प्रचण्ड पाण्डव), विद्धशाल भंजिका** नाम से नाटक व काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोष नामक काव्य ग्रंथों की रचना की
- **Rajasekhar** ने अपनी पत्नी अवन्ति सुंदरी के कहने पर ही 'कर्पूरमंजरी' की रचना की थी ।
- महेन्द्रपाल को 'निर्भय नरेश' कहा गया है ।
- इतिहासकार जी. एन. पाठक ने अपने ग्रंथ ' **उत्तर भारत का राजनेतिक इतिहास** ' में प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल प्रथम को हिंदु भारत का अतिंम महान हिंदूसम्राट माना है ।

महिपाल प्रथम (914-943 ई)

- महिपाल ने भी राजशेखर को आश्रय दिया था । राजशेखर ने महिपाल प्रथम को '**आर्यवृत्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुक्तामणि व रघुकुल मुकुटमणि**' के नाम से पुकारा ।
- राजशेखर ने महिपाल को बाल भारत नाटक में रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंशरूपी मोतियों में मणि के समान) एवं आर्यवृत का महाराजाधिराज लिखा है । महिपाल को विनायकपाल एवं हेरम्भपाल के नाम से भी जाना जाता है ।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram
YouTube
Websites

-

महिपाल के समय 915 ईं. में अरब यात्री **अलमसूदी** भारत आया ।
- अलमसूदी ने गुर्जर-प्रतिहारों को **अलगुर्जर** व राजा को बोरा कहा ।
- महिपाल प्रथम के शासनकाल से प्रतिहारों का पतन शुरू हो गया

महेन्द्रपाल-द्वितीय (945-948 ईं.)

- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों में चार शासक हुए देवपाल (948-49 ईं.) , विनायकपाल द्वितीय (953-54 ईं.) , महीपाल द्वितीय (955 ईं.), विजयपाल द्वितीय (960 ईं.) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई ।

राज्यपाल

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय **महमूद गजनवी** ने कन्नौज पर 1018 ईं. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल

- रज्यपाल के बाद **त्रिलोचनपाल प्रतिहारों** का शासक बना ।
- जिसे महमूद गजनवी ने 1019 ईं. में पराजित किया ।

यशपाल

- प्रतिहारवंश का अंतिम शासक यशपाल (1036 ईं.) था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ईं॰ में पतन हो गया ।

राजस्थान क्लासेज

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- **SSC** एग्जाम **Syllabus** यहाँ से देखे
- **PTET** एग्जाम **Syllabus** यहाँ से देखे
- राज. पु लस एग्जाम **Syllabus** यहाँ से देखे
- वनपाल **&** वनरक्षक **Syllabus** यहाँ से देखे
- **BSTC 2022 Complete** कोर्स यहाँ से देखे

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/